Regd. With the Registrar of News Papers of India at PUN BIL/2002/07848
Postal Reg. No. GDP-41/2017-19

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

मासिक

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

जून/ 2020 ई०

Annual Subscription: Rs. 210/- (Per Issue: Rs. 20/-
(Weight : 50-100, grms / Issue)

20-4-2020 को मज्लिस अन्सारुल्लाह चेन्नई (तमिल नाडू) द्वारा आयोजित ख़िदमत-ए-ख़लक प्रोग्राम का एक दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह इब्राहीमपुर (पश्चिम बंगाल) ग़रीबों में आवश्यक सामाग्री वितरित करते हुए।

फ़रवरी 2020 में मज्लिस अन्सारुल्लाह करडापल्ली (ओडिशा) द्वारा आयोजित पिकनिक के अवसर पर नमाज़ पढ़ाते हुए श्री अब्दुल हलीम साहब मुबल्लिग़ इन्चार्ज।

फ़रवरी 2020 में मज्लिस अन्सारुल्लाह करडापल्ली (ओडिशा) द्वारा आयोजित पिकनिक का एक दृश्य। श्री टी एम अब्दुल मुजीब क़ायद वक़्फ़-ए-जदीद मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत भी उपस्थित हैं।

20-5-2020 को मज्लिस अन्सारुल्लाह त्रिवेंद्रम (केरल) प्रवासी कामगारों में आवश्यक सामान वितरण करने के लिए गाड़ी में डालते हुए नासिर सदस्य का दृश्य।

19-5-2020 को मज्लिस अन्सारुल्लाह पालक्कड़, त्रिशूर (केरल) प्रवासी कामगारों में आवश्यक सामान वितरण करने के लिए तय्यारी करते हुए अंसार सदस्यों का दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह इब्राहीमपुर (पश्चिम बंगाल) ग़रीबों में आवश्यक सामाग्री वितरित करते हुए।

20-5-2020 को मज्लिस अन्सारुल्लाह त्रिवेंद्रम (केरल) प्रवासी कामगारों में आवश्यक सामाग्री वितरित करते हुए।

श्री मुहम्मद नज़ीर अहमद अमीर ज़िला के नेतृत्व में मज्लिस अन्सारुल्लाह पालाकुर्ती (वरंगल) तेलंगाना द्वारा प्रवासी कामगारों में आवश्यक सामाग्री वितरित करते हुए।

मज्लिस अन्सारुल्लाह पालाकुर्ती ज़िला वरंगल (तेलंगाना) द्वारा प्रवासी कामगारों हेतु आवश्यक सामाग्री की पेकिंग करते हुए।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ

سورۃ الصف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 18 जून 2020 **Issue - 6**

विषय सूची	पृष्ठ

दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रवचन	3
सम्पादकीय - कोरोना वायरस ग़ाफिलों के लिए नसीहत	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन - करोना वाइरस के अवसर पर जमाअत अहमदिया की मानव सेवा	6
(तकरीर सालाना इज्तिमा 2020 ई) मज्लिस अन्सारुल्लाह की स्थापना का उद्देश्य, दुनिया की साइसीं तरक्की में इस्लाम का योगदान	8 9

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
मक़्सूद अहमद भट्टी
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
तसनीम अहमद बट्ट

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا وَ لَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۲﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَ الطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۳۳﴾

(सूर: अल- आराफ: आयत 31-32)

अनुवाद - हे आदम के बेटो हर मस्जिद के क़रीब ज़ीनत (के सामान) धारण कर लिया करो और खाओ और पीयो और इसराफ़ न करो क्योंकि वह (अल्लाह)इसराफ़ करने वालों को पसंद नहीं करता। तू कह दे कि अल्लाह की इस ज़ीनत को जिसको उसने अपने बन्दों के लिए निकाला है किस ने हराम किया है? इसी तरह रिज़्क़ में से पाकीज़ा चीज़ों को भी (किस ने हराम किया है) तू कह दे यह तो (असल में) इस दुनिया में (भी) मोमिनों के लिए हैं और क़यामत के दिन सिर्फ उनके लिए ही होंगी। इसी तरह हम अपने निशानों को इल्म वाले लोगों के लिए खोल कर वर्णन करते हैं।

दर्सुल हदीस

عَنْ اَبِيْ مَالِكٍ الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلطُّهُوْرُ شَطْرُ الْاِيْمَانِ۔

अनुवाद - हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया पवित्रता , पाकीज़गी और साफ़ सुथरा रहना भी ईमान का एक हिस्सा है

(मुस्लिम किताबुत्तहारत बाब फज़लिल वज़ू)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

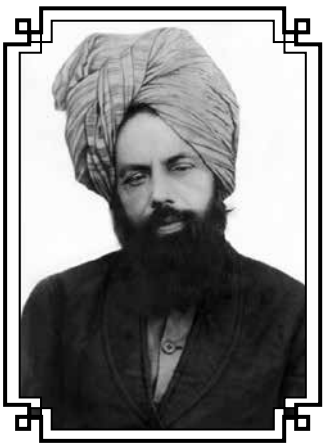

हमारी जिस्मानी सफाई को हमारी रुहानी पवित्रता में बहुत कुछ दख़ल है।

" कुरआन ने उस ज़माना में अरब के लोगों को ऐसा ही पाया था और वे न केवल रूहानी पहलू की दृष्टि से ख़तरनाक हालत में थे बल्कि शारीरिक पहलू की दृष्टि से भी उनकी सेहत बहुत खतरे में थी। अत: यह ख़ुदा तआला का उन पर और पूरी दुनिया पर एहसान था कि स्वच्छता के नियमों की स्थापना करे। यहां तक कि यह भी फरमा दिया कि كُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا (अलआराफ : 32) अर्थात नि:सन्देह खाओ पीओ मगर खाने पीने में व्यर्थ रूप से कोई अधिकता स्थिति या मात्रा की मत करो। अफसोस पादरी इस बात को नहीं जानते कि जो व्यक्ति शारीरिक पवित्रता की बात को बिल्कुल छोड़ देता है वह धीरे धीरे पाश्विक हालत में गिर कर रूहानी पवित्रता से भी बे नसीब रह जाता है। जैसे कुछ दिनों दान्तों का ख़िलाल करना छोड़ दो, जो एक कम सफाई के स्तर पर है तो वह बचे हुए टुकड़े जो दांतों में फंसे रहेंगे उनमें से सड़े हुए मुर्दा की गंध आएगी। अंत दांत ख़राब हो जाएंगे और उनका विषाक्त प्रभाव पेट पर गिर कर पेट भी अनियमित हो जाएगा। ख़ुद विचार कर के देखो कि जब दांत के अंदर किसी मांस का रेशा या कोई अंश फंसा रह जाता है और इसी समय ख़िलाल के साथ निकाला नहीं जाता तो एक रात भी रह जाए तो भयानक बदबू इस में पैदा हो जाती है और ऐसी बदबू आती है जैसा कि चूहा मरा हुआ होता है। इसलिए यह कैसी नादानी है कि बाहरी और शारीरिक पवित्रता पर ऐतराज़ हो और यह शिक्षा दी जाए कि तुम शारीरिक सफाई की कुछ परवाह न रखो। न ख़िलाल करो और न मिसवाक करो और न कभी स्नान करके बदन पर से मैल उतारो और न पाख़ाना जा कर सफाई करो और तुम्हारे लिए सिर्फ रूहानी पवित्रता काफी है। हमारे ही तजुर्बे हमें बतला रहे हैं कि हमें जैसा कि रूहानी पवित्रता रूहानी स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है ऐसा ही शारीरिक स्वास्थ्य के लिए शारीरिक पवित्रता की ज़रूरत है बल्कि सच तो यह है कि हमारी शारीरिक पवित्रता को हमारी रूहानी पवित्रता में बहुत दखल है। क्योंकि जब हम शारीरिक पवित्रता को छोड़कर उसके बुरे परिणाम अर्थात ख़तरनाक बीमारियों को भुगतने लगते हैं तब हमारे धार्मिक कर्तव्यों में भी हर्ज हो जाता है और हम बीमार होकर ऐसे निकम्मे हो जाते हैं कि कोई धार्मिक सेवा नहीं कर सकते। और या कुछ दिन दु:ख उठाकर दुनिया से कूच कर जाते हैं बल्कि बजाय इस के कि मानव जाति की सेवा कर सकें अपनी शारीरिक अपवित्राओं और सेहत के नियमों को छोड़ कर औरों के लिए जान की मुसीबत हो जाते हैं और अंत में इन अपवित्राओं का ढेर जिसे हम अपने हाथ से इकट्ठा करते हैं महामारी के रूप में उग्र होकर सारे देश को खा जाता है। और यह सब मुसीबत का कारण हम ही होते हैं क्योंकि हम ज़ाहरी सफाई के सिद्धांतों का ध्यान नहीं रखते तो देखो कि कुरआन के सिद्धांतों को छोड़कर और फुर्कान की वसीयत को छोड़ के कुछ बलाएं मनुष्यों पर आती हैं और ऐसे असावधान लोग जो परहेज़ नहीं करते और गन्दगी को अपने घरों और गलियों और कपड़ों और मुंह से दूर नहीं करते उन की असावधानियों के कारण मानव जाति के लिए कैसे ख़तरनाक परिणाम पैदा होते हैं। और कैसी अचानक महामारियां फूटती और मौतें पैदा होती हैं और क़यामत का शोर बरपा हो जाता है यहाँ तक कि लोग बीमारी की दहशत से अपने घरों और माल और संपत्ति और सारी इस संपत्ति से जो जान हलाक कर के जमा की थी छोड़ कर दूसरे देशों की तरफ दौड़ते हैं और माताएं बच्चों से और बच्चे माताओं से अलग किए जाते हैं। क्या यह मुसीबत नरक की आग से कुछ कम है ? डॉक्टरों से पूछो वैद्यों से पूछो कि क्या ऐसी लापरवाही जो शारीरिक पवित्रता के विपरीत सक्रिय हो महामारी के लिए बिल्कुल उचित और उपयुक्त है या नहीं? इसलिए कुरआन ने क्या बुरा किया कि पहले शरीर और घरों और कपड़ों की सफाई पर ज़ोर देकर इंसानों को इस नरक से बचाना चाहा जो इसी दुनिया में अचानक पक्षघात की तरह गिरता और मौत तक पहुंचाता है। फिर दूसरे नरक से सुरक्षित रहने के लिए वे सीधे पथ बतलाए कि इंसान की प्रकृति के ठीक अनुकूल और कानून क़ुदरत के अनुसार है। और हमें मुक्ति की वह राह बतलाई जिस में किसी बनावटी योजना की गंध नहीं आती।

(अय्यामुस्सुलह, रुहानी ख़ज़ायन भाग नम्बर 14 पृष्ठ नम्बर 332 से 334)

सम्पादकीय

करोना वाइरस
ग़ाफिलों के लिए नसीहत

करोना वाइरस (COVID-19) ने सारी दुनिया में दहश्त और वहशत का माहौल पैदा कर दिया है। ताज़ा रिपोर्ट के अनुसार इस विश्वव्यापी महामारी से दुनिया में 3,10,801लोगों की मौत हो चुकी है। सबसे ज़्यादा मौतों वाले पाँच देशों की विवरण निम्नलिखित है

नम्बर	नाम देश	प्रभावित	मौतें
1	अमरीका	14,93,514	88,930
2	बर्तानिया	2,40,161	34,466
3	इटली	2,24,760	31,763
4	स्पेन	2,76,505	27,563
5	फ्रांस	1,79,506	27,529

(दैनिक साक्षी तेलूगू अख़बार 17 मई 2020 पृष्ठ 1)

महामारियां मानव जाति को जितनी हानि पहुंचाती हैं इतने ही नसीहत वाले दृश्य भी दिखाती हैं। जो क़ौमें नसीहत हासिल करके अपनी हालात को सकारात्मक ढंग में तबदील करती हैं वे ग़ैरमामूली उन्नतियां करती हैं। जब इन्सान अज्ञानता की ज़िन्दगी गुज़ारता है तो वह अपनी समीक्षा नहीं कर सकता। इसी लिए क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है।

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ۭ اُولٰۗىِٕكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ

(अल-आराफ़:180) अर्थात और हम ने जिन्नों और इन्सानों को रहमत के लिए पैदा किया है मगर नतीजा यह होता है कि उनमें से अक्सर जहन्नुम के पात्र हो जाते हैं उनके दिल तो हैं मगर उनके माध्यम से वे समझते नहीं और उनकी आँखें तो हैं मगर उनके माध्यम से वे देखते नहीं और उनके कान तो हैं मगर उनके माध्यम से वे सुनते नहीं। वे लोग जानवरों की तरह हैं बल्कि उनसे भी बदतर (असल बात यह है कि) वे बिलकुल जाहिल हैं

इस आयत की तफ़सीर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम फ़रमाते हैं

"हदीस शरीफ़ से पता चलता है कि बुख़ार भी भी जहन्नुम की गर्मी ही है, बीमारियां और परेशानियां जो विभिन्न किस्म की इन्सानों को होती हैं ये भी जहन्नुम ही का नमूना हैं ओर या इसलिए कि ताकि दूसरे लोक पर गवाह हों और जज़ा सज़ा के विषय की हक़ीक़त पर दलील हों और कफ़्फ़ारा के व्यर्थ विषय को रद्द करें। जैसे कोढ़ ही को देखो कि अंग गिर गए हैं और गाढ़ा माद्दा अंगों से जारी है। आवाज़ बैठ गई है। एक तो यह अपने आप में ख़ुद जहन्नुम है फिर लोग नफ़रत करते हैं और छोड़ जाते हैं। प्रिय से प्रिय बीवी , बेटे,माँ बाप तक किनारा कर लेते हैं। कई अंधे और बहरे हो जाते हैं कई और ख़तरनाक बीमारियों में पड़ जाते हैं। पथरियाँ हो जाती हैं। अन्दर पेट में रसोलियाँ हो जाती हैं। ये सारी बलाऐं इसलिए इन्सान पर आती हैं कि वह ख़ुदा से दूर हो कर ज़िन्दगी बसर करता है और इस के हुज़ूर गर्व और गुस्ताख़ी करता है और अल्लाह तआला की बातों की इज़्ज़त और परवाह नहीं करता उस वक़्त एक जहन्नुम पैदा होता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 372)

जहां इस महामारी के कारण से हुकूमतों, घरेलु संस्थाओं और लोगों को ज़ाती तौर पर भी कई अहम बातों की तरफ़ ध्यान पैदा हुआ है। जैसे तिब्बी मामले, व्यापार के तरीक़े,सफ़र की सावधानियां और सफ़ाई सुथराई का महत्व इत्यादि हैं। इसी तरह अल्लाह करे मानव जाति को अपने पैदाइश का उद्देश्य हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूक़ुल ईबाद की तरफ़ भी ध्यान पैदा हो। अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है।وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ (अल-आराफ़180)अर्थात और कभी ग़फ़लत करने वालों में शामिल न हो।

करोना वाइरस के हवाला से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"हर अहमदी को इन दिनों में खासतौर पर दुआओं की तरफ़ भी तवज्जा देना चाहिए और अपनी रुहानी हालत को भी बेहतर करने की तरफ़ ध्यान देना चाहिए और दुनिया के लिए भी दुआ करनी चाहिए अल्लाह तआला उनको भी हिदायत दे अल्लाह तआला दुनिया को तौफ़ीक़ दे कि वह बजाय दुनियादारी में ज़्यादा पड़ने के और ख़ुदा तआला को भूलने के अपने पैदा करने वाले ख़ुदा को पहचानने वाले भी हों।"

(ख़ुत्बा जुमा 6 मार्च 2020 ई)

दुआ है कि जहां दुनियादारी की दृष्टि से इस महामारी से नसीहत हासिल हो रही ही वहीं आचरण , धार्मिक ,रुहानी दृष्टि से भी पवित्र तबदीली पैदा हो। आमीन

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मजलिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

करोना वाइरस के अवसर पर जमाअत अहमदिया की मानव सेवा

क़ुरआन करीम और इस्लामी शिक्षाओं का सार "ख़ालिक़ की इबादत और मख़लूक़ की सेवा" है। अत: प्यारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: اَلْخَلْقُ عِيَالُ اللّٰهِ فَاَحَبُّ الْخَلْقِ اِلَى اللّٰهِ مَنْ اَحْسَنَ اِلٰى عِيَالِهٖ अर्थात समस्त मख़लूक़ अल्लाह की ख़ानदान हैं। अत: अल्लाह तआला को अपनी सृष्टि में से वह आदमी बहुत पसंद है जो उस के अयाल (मख़लूक़) के साथ अच्छा व्यवहार करता है और उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखता है

(बीहक़ी फ़ी शुअबिल ईमान 425)

ज़माना के इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम अपने एक फ़ारसी शेअर में अपनी ज़िन्दगी का उद्देश्य मानव सेवा क़रार देते हुए फ़रमाते हैं

मेरा मकसूद व मतलूब व तमन्ना ख़िदमते ख़लक़ अस्त
हमीं कारम, हमीं बारम्, हमीं रसमम, हमीं राहम

अर्थात मेरी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी तमन्ना और इच्छा मानव सेवा है। यही काम,यही मेरी ज़िम्मेदारी ,यही मेरा कर्तव्य और यही मेरा तरीक़ा है

करोना वाइरस की महामारी एक विश्वव्यापी छूआछूत की जान लेने वाली बीमारी होने की वजह से हुकूमतों की तरफ़ से कर्फ़्यू और लॉक डाउन के आदेश जारी हैं। कारख़ाने,दुकानें और आय के समस्त माध्यम रुके हुए हैं। इन अवस्थाओं में मज़दूर वर्ग या दैनिक आमदनी पर आधारित ग़रीब अवाम को रोज़ाना दो समय का खाना नहीं मिल रहा है। इस के अतिरिक्त कई व्यापारिक या घरेलू नौकरी करने करने वाले लोग भी हैं।

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेन्स्रहिल अज़ीज़ इन मुश्किल दनिों में हुक़ूक़ुल-ईबाद की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए फ़रमाते हैं

"सही रंग में हमें इबादत का और हुक़ूक़ुल ईबाद का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और शीघ्र यह बला हम से दूर फ़रमाए। दुनिया को भी समझ और अक़्ल दे वह भी एक ख़ुदा को पहचानने वाले बनें ख़ुदा तआला की इबादत करने वाले बनें तौहीद को जानने वाले बनें। अल्लाह तआला सब पर रहम फ़रमाए।"

(ख़ुत्बा जुमा 17 अप्रैल 2020 ई)

हुज़ूर अनवर के इस इरशाद पर सारी दुनिया में समस्त अहमदियों ने लब्बैक कहा है। अत: इस अवसर पर प्रभावितों में भी मजालिस अन्सारुल्लाह की तरफ़ से जमा की गई रक़में और खाद्यान ह्यूमैनिटी फ़रस्ट और ख़ुद्दाम के माध्यम से ज़रूरतमंदों तक पहुँचाकर मानव सेवा की यथा सम्भव कोशिश की जा रही है। जमाअत की तरफ़ से सरअंजाम देने वाली इन सेवाओं का वर्णन करते हुए अगले ही ख़ुत्बा जुमा में सय्यदना हुज़ूर अनवर

फ़रमाते हैं

"आजकल जो महामारी फैली हुई है वाइरस की उसने हुकूमत के क़ानून के अधीन अधिकतर लोगों को घरों में बंद कर दिया है और यहां एक अच्छी बात जमाअत में इस दृष्टि से भी पैदा हो रही है लोगों में भी कुछ स्थानों पर उनका ख़्याल आ रहा है लेकिन जमाअत में खासतौर पर इस तरफ़ ध्यान है दुनिया के हर देश में कि ख़ुद्दामुल अहमदिया के अधीन वालंटेयरज़ के अधीन जहां-जहां मदद की ज़रूरत है लोगों को ख़ुराक पहुंचाने के लिए या दूसरी सुविधाएं पहुंचाने के लिए दवाईयां पहुंचाने के लिए वे कर रहे हैं। तो ये जो हक़ अदा किए जा रहे हैं ये एक ऐसा नमूना पेश कर रहे हैं जिससे अपने तो फ़ायदा उठा ही रहे हैं ग़ैर भी फ़ायदा उठा कर प्रभावित हो रहे हैं अत: ये सोच जो आजकल पैदा हुई है इन्सानी सेवा के लिए भी यह सोच हमेशा हमारे अंदर क़ायम रहने वाली होनी चाहीए न कि सिर्फ हंगामी हालात के लिए।"

(ख़ुत्बा जुमा 24 अप्रैल 2020 ई)

स्पष्ट है कि करोना वाइरस की समाप्ति शीघ्र होने वाली नहीं है। हमें समस्त सावधानियों के साथ दिन गुज़ारने हैं। इस लिए बहुत जल्द दवाई का तैयार होना लाज़िमी है। इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार हर बीमारी की दवा मौजूद है। लेकिन सम्पूर्ण कोशिश के द्वारा उस का ईजाद करना इन्सान का फ़र्ज़ है। अगर वह दवाई तैयार हो जाए तो यह मानव जाति की बहुत बड़ी सेवा होगी। जो लोग इस बीमारी के ईलाज के लिए कोशिश कर रहे हैं उन की कामयाबी के लिए भी हुज़ूर अनवर दुआ की तहरीक करते हुए फ़रमाते हैं

" इस माहामारी से बचने के लिए दुआएं करें और कोशिश करें और इस बीमारी के ईलाज के लिए भी जो साईंसदान कोशिश कर रहे हैं उनकी मदद करें।"

(ख़ुत्बा जुमा 24 अप्रैल 2020 ई)

दुआ है कि अल्लाह तआला मजालिस अन्सारुल्लाह भारत को मानव सेवा में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन

अताउल मुजीब लोन

सदर मजलिस अन्सारुल्लाह भारत

Mobile : 9572858090, 9955553631
NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE
Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030
زبیر احمد شحنہ
ZUBER
Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

मज्लिस अन्सारुल्लाह की स्थापना का उद्देश्य

2020 के इज्तिमा में तक़रीरों के मुक़ाबले हेतु

शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री, कादियान

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाहो की ख़ुदा तआला द्वारा प्रदत ज़हानत और इल्मी व इंतिज़ामी सलाहियतों के प्रकटन होने एक स्पष्ट सबूत ज़ैली तन्ज़ीमों की स्थापना है। आप ने जमाअत के मर्द व औरत, और बच्चों बच्चियों को अपनी उम्र के लिहाज़ से ज़ैली तन्ज़ीमों में बांट कर के उन की रुहानी , अख़लाक़ी, मआशी, मुआशरती और जिस्मानी तरक़्क़ी के सामान मुनज़्ज़म रूप में पैदा कर दिए।

लजना इमाउल्लाह और ख़ुद्दामुल अहमदिया के क़ियाम के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि ने 26 जुलाई 1940 ई को अपने ख़ुत्बा जुमा में मज्लिस अन्सारुल्लाह के क़ियाम का ऐलान फ़रमाया और हज़रत मौलाना शेर अली साहिब रज़ि को इस का पहला सदर निर्धारित फ़रमाया। आरम्भिक रूप से कादियान के अन्सार की तंज़ीम बनाई गई और फिर उस को पूरे हिन्दुस्तान और देश के बाहर तक फैला दिया गया

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ज़ैली तन्ज़ीमों की स्थापना के उद्देश्य वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि

"इन मज्लिसों का क़ियाम मैंने तरबीयत के उद्देश्य से किया है। चालीस साल से कम उम्र वालों के लिए ख़ुद्दामुल अहमदिया और चालीस साल से ऊपर उम्र वालों के लिए अन्सारुल्लाह और औरतों के लिए लजना इमाउल्लाह है। इन मज्लिसों पर दरअसल तर्बीयती ज़िम्मेदारी है। याद रखो कि इस्लाम की बुनियाद तक़्वा पर है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक शेअर लिख रहे थे। एक मिसरा आप ने लिखा क

हर एक नेकी की जड़ यह इत्तिक़ा है

इसी वक़्त आप आप को दूसरा मिसरा इल्हाम हुआ जो है यह है

अगर यह जड़ रही सब कुछ रहा है

इस इल्हाम में अल्लाह तआला ने बताया है कि अगर जमाअत तक़्वा पर क़ायम हो जाएगी तो फिर वह ख़ुद हर चीज़ की हिफ़ाज़त करेगा अत: मज्लिस अन्सारुल्लाह,ख़ुद्दामुल अहमदिया और लजना इमा उल्लाह का काम यह है कि जमाअत में तक़्वा पैदा करने की कोशिश करें और इस के लिए पहली ज़रूरी चीज़ ईमान बिलग़ैब है।" (अलफ़ज़ल 26 अक्तूबर 1960 ई)

एक अन्य अवसर पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ख़िलाफ़त से जुड़े रहने के हवाला से अन्सार की ज़िम्मेदारियों की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए फ़रमाते हैं कि

"याद रखो तुम्हारा नाम अन्सारुल्लाह है अर्थात अल्लाह तआला के मददगार। मानो तुम्हें अल्लाह तआला के नाम की तरफ़ सम्बन्धित किया गया है और अल्लाह तआला सदैव और अनादि है। इसलिए तुमको भी कोशिश करनी चाहिए कि अब्दीयत के द्योतक हो जाओ। तुम अपने अन्सार होने की निशानी अर्थात ख़िलाफ़त को हमेशा के लिए क़ायम रखते चले जाओ और कोशिश करो कि ये काम एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल पर चलता चला जाए।"

(अलफ़ज़ल 24 मार्च 1957 ई)

हमारे प्यारे हुज़ूर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कई बार अन्सारुल्लाह को उन की ज़िम्मेदारियों की तरफ़ ध्यान दिला रहे हैं। मज्लिस अन्सारुल्लाह जर्मनी के

सालाना इज्तिमा 2007 ई के अवसर पर अपने पैग़ाम में हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अन्सारुल्लाह को उनकी तीन अहम ज़िम्मेदारियों 1 नमाज़ का कियाम 2 क़ुरआन करीम सीखने और सिखाने 3 तरबियत औलाद की तरफ़ ध्यान दिलाया। इसी तरह एक अवसर पर फ़रमाया कि

"अन्सारुल्लाह को हमेशा याद रखना चाहिए कि आपके व्यावहारिक नमूने और पवित्र तब्दीलियां दूसरी तन्ज़ीमों और जमाअत के लोगों से बढ़कर होनी चाहिऐं। हमारे बड़ों ने अन्सारुल्लाह होने का हक़ अदा किया और बेनफ़्स हो कर धर्म के लिए क़ुर्बानियां कीं तो आज हमारा फ़र्ज़ है कि एक निरन्तर कोशिश और दुआओं के साथ अपने पीछे आने वालों के लिए नेकी के रास्ते तैयार करते जाएं।"

(मासिक अन्सारुल्लाह रब्वह अक्तूबर 2010 ई पृष्ठ 8-9)

अल्लाह तआला हम अन्सार को मज्लिस अन्सारुल्लाह के बुनियादी उद्देश्यों क़ियामे नमाज़, तिलावत क़ुरआन, ख़िलाफ़त से जंड़ना, तब्लीग़ इस्लाम और औलाद की तकरबीयत की ज़िम्मेदारी को उत्तम रंग में अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। और हम में से हर अन्सार एक मिसाली अन्सार बने। आमीन

दुनिया की साईंसी और इल्मी तरक़्क़ी में इस्लाम की भूमिका

2020 के इज्तिमा में तक़रीरों के मुक़ाबले हेतु

डाक्टर जावेद अहमद लोन- क़ादियान

क़ुरआन करीम का आरम्भ 'इकरा'अर्थात पढ़ के शब्द से हुआ है। इसी सूरः में अल्लाह तआला फ़रमाता है। الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ﴿۵﴾ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْ ؕ﴿۶﴾ (अल-अलक:5 से 6)अर्थात (अल्लाह)जिसने क़लम के द्वारा सिखाया। इन्सान को वह कुछ सिखाया जो वह नहीं जानता था

यह एक हक़ीक़त है कि इल्म रोशनी है और अज्ञानता अन्धकार है। हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि ने शिक्षा के प्राप्त करने पर बहुत ज़ोर दिया है। मुस्लमानों ने इंतिहाई असहाय हालत में मक्का के कुफ्फार के साथ जो पहली जंग बदर लड़ी थी इस में विजय प्राप्त की थी। इस जंग में जो क़ैदी मुस्लमानों के हाथ आए उन की आज़ादी के फ़िद्या के तौर पर एक शर्त यह भी रखी गई थी कि लिखना पढ़ना जानने वाले क़ैदी अगर मुस्लमानों को पढ़ना लिखना सिखा देंगे तो उन्हें आज़ाद कर दिया जाएगा। इस तरह मदीना के मालिक आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ैदियों से भी इल्म के हुसूल को बुरा न समझा।

आलोचक कहते हैं कि इस्लाम एक रूढ़िवादी और पुराना मज़हब है जोकि नए ज़माना की मांग के अनुसार इल्मी और तरक़्क़ी को नहीं मानता। दरअसल यह आरोप निराधार है। क़ुरआन करीम अपने आप शिक्षा को हासिल करने के महत्व उजागर करता है। अत: मुस्लमानों को दुआ सिखाता है कि رَبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا (ताहा-115)कि हे मेरे रब मेरे इलम में वृद्धि फ़र्मा। जहां यह दुआ मुस्लमानों को ज्ञान के प्राप्त करने में मदद देती है वहां उमूमी तौर पर इल्म को बढ़ावा देती है और लोगों को इल्म को हासिल करने के लिए हौसला प्रदान फ़रमाती है। अगर हम इस्लामी के देखें तो हमें बहुत से मुस्लमान दानिश्वर, आविष्कारक, फ़लसफ़ी, साईंसदान, इत्यादि नज़र आएँगे। इन लोगों ने मध्यकाल में साईंस और अन्य इल्मों की इतनी सेवा की कि आज की नई तरक्कियां उन के बिना संभव

न थीं। जैसे मुसलमान आविष्कार करने वालों में इब्न अलहैसम ने कैमरे की ईजाद की। जिसको यूनेस्को के इदारे ने Poineer of Optics क़रार दिया

सामईन यह स्पष्ट रहे कि कैमरा भी अरबी लफ़्ज़ "कमर" से बना है। बारहवीं सदी में एक मुसलमान ने दुनिया का निर्धारित नक़्शा बनाया जिस से सदियों तक लोग फ़ायदा उठाते रहे

फिर तिब्ब (वैद्य) के मैदान में भी मुस्लमान तबीबों ने बहुत सी ऐसी खोज़ें कीं जिनसे दुनिया आज भी बहुत फ़ायदा उठा रही है। सत्रहवीं सदी में एक अंग्रेज़ डाक्टर'विलियम हार्वे ने ख़ून के चलने के दौरान और इन्सानी दिल के कामों पर एक इन्क़िलाब पैदा करने वाली तहक़ीक़ पेश की। लेकिन फिर मालूम हुआ कि इस विषय पर चार सौ साल पहले 'इब्न नफ़ीस जैसे मुस्लमान तबीब विस्तारपूर्वक बहस कर चुके हैं। इसी तरह जाबिर बिन हय्यान ने कैमिस्ट्री की क्षेत्र में ऐसे तरीक़े और केमिकल ईजाद किए जो आज भी प्रयोग हो रहे हैं। जैसे हाइड्रोजन पर ऑक्साइड इसी मुसलमान की ईजाद है। जिस से आज भी बहुत सारे काम लिए जाते हैं। इसी तरह नक्षत्र विज्ञान के उलूम की तरक़्क़ी में भी मुस्लमान माहरीन की ख़िदमाते गर्व योग्य हैं। फिर अलजबरा के आविष्कारक भी मुस्लमान हिसाब जानने वाले थे। कम्प्यूटर की बुनियाद Algorithm पर है। इस पर भी बुनियादी काम मुसलमान हिसाव जानने वालों ने ही किया है। अत: मध्य सुग में साईंस के उलूम सीखने की भाषा अरबी थी ethics हिसाब,फलसफा और अन्य उलूम के बहुत से माहेरीन मुसलमान थे

मौजूदा ज़माने में 1889 ई में जमाअत अहमदिया की स्थापना से लेकर अब तक जमाअत अहमदिया मुस्लिमा भी इल्म को बढ़ावा की कोशिश कर रही है। 1979 ई में फ़िज़ेक्स मैं पहले नोबल ईनाम पाने वाले मुस्लमान साईंसदान डाक्टर अब्दुस्सलाम अहमदी थे। आप महोदय ने सारी ज़िन्दगी इस बात की वकालत की कि इस्लाम और क़ुरआन करीम उनकी समस्त साईंसी तहक़ीक़ात का रहनुमा है। क़ुरआन करीम में साढ़े सात सौ आयते ऐसी हैं जो साईंस, क़ुदरत और कायनात के राज़ों से पर्दा उठाती हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरे फ़िर्क़ा के लोग इल्म और मअरफत में कमाल हासिल करेंगे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने हर अहमदी के लिए कम से कम F.A(बारहवीं) तक शिक्षा हासिल करना ज़रूरी क़रार दिया है। दुआ है कि अल्लाह तआला हमें इल्म के उच्च स्तर हासिल करके धर्म तथा दुनिया की महान सेवाएं करने की तौफीक़ प्रदान करे। आमीन

❁❁❁